# हमारे प्रमुख संस्थान

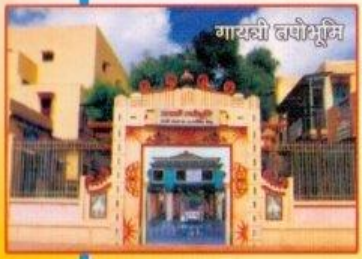

# हमारे प्रमुख संस्थान

युगद्रष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवनकाल (१९११-१९९०) में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण, उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युग निर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी, जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है, तब ईंट-गारे-चूने-सीमेन्ट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नान कर उनके अपने हो गए लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिन्होंने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण, आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक, भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। आचार्यश्री ने पहले स्वयं को तपाया, तदुपरांत वैचारिक क्रांति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीय माताजी के रूप में खड़ा किया।

इसे प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की छह मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश-विदेश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों, प्रज्ञासंस्थानों, भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित एक लाख से भी अधिक स्वाध्याय

मण्डलों, गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों, चरणपीठों का महत्त्व समझा जा सकता है, नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं, वैसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था। उनमें यदि प्राण फूँके गए हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों, वे उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत प्रगति की दिशा में चल रहे हों, तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्य पूर्ण था।

**परमपूज्य गुरुदेव की छह स्थापनाएँ इस प्रकार है—**

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (आगरा), (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा, (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा, (४) शांतिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्त सरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार (६) देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज, हरिद्वार।

## युगतीर्थ आँवलखेड़ा

युगतीर्थ आँवलखेड़ा, आगरा जिले का जलेसर रोड पर स्थित छोटा सा गांव है, जहाँ आश्विन कृष्णा त्रयोदशी संवत् १९६८ (२० सितंबर १९११) को युग पुरुष पं० श्रीराम शर्मा ने जन्म लिया। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित, बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है—वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो कालप्रवाह के क्रम में गिर-सी गई थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गई हैं, जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ, जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया, वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक, जहाँ स्वतंत्रता

संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं, जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है, जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीरधारी उनकी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क-पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कॉलेज है, जो उनके द्वारा दान दी गई जमीन में प्रदत्त धनराशि द्वारा विनिर्मित है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कॉलेज से कई मेधावी छात्र निकलकर आत्मनिर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ एवं कन्या इंटर कॉलेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा, जो एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित, संस्कारवान, आत्मावलंबी बनाने वाले माता भगवती देवी कन्या महाविद्यालय का रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्‌भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नवनिर्माण की सांस्कृतिक तथा भावनात्मक क्रांति की पृष्ठभूमि रख सके। शासन द्वारा वंदनीया माताजी की स्मृति में माता भगवती देवी राजकीय चिकित्सालय प्रारंभ किया गया है। पूज्यवर की जन्मभूमि पर तत्कालीन प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिंहाराव ने कीर्ति स्तंभ का लोकार्पण १९९५ में किया। गायत्री शक्तिपीठ पर गोशाला, स्वावलंबन एवं साधना की गतिविधियाँ चल रही हैं। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गए; वहाँ एक

मकान किराए पर लिया, जिसे आज अखण्ड ज्योति संस्थान कहते हैं।

## अखण्ड ज्योति संस्थान

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ आगरा से आकर यहीं रहने लगे। यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गई थी, इसकी 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यही वह स्थान है, जहाँ आकर अगणित दुखी, तनाव ग्रसित व्यक्तियों ने गुरुदेव के स्पर्श से नए प्राण पाए तथा उनके व परम वंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये।

हाथ से बने कागज पर छोटी टेड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी। छोटी-छोटी पुस्तकों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खरच निकलता था। बगल की एक छोटी-सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, वहीं पर आज भी पूजाघर विर्निमित है। पूरी बिल्डिंग को खरीदकर एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया गया है, किंतु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गई है, जैसी पूज्यवर के समय १९४२-४३ में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ के सहस्र कुण्डीय यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गई, यहीं सारी योजनाएँ बनी एवं विधिवत गायत्री परिवार बनता चला गया।

रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परम वंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका समाधान हो पत्र चला जाता। देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड जो आज संयुक्त रूप से छापा गया है, युग निर्माण परक साहित्य, आर्षग्रंथों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों, छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डीय पाँच विराट यज्ञों, विदाई सम्मेलन की पूज्यवर ने यहीं से रूपरेखा बनाई। स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर हरिद्वार शांतिकुंज चले गए। इस संस्थान के कण-कण में ऋषियुग्म की चेतना संव्याप्त है। पुस्तकों का प्रकाशन, कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतस्तल को छूने की प्रक्रिया यहीं से प्रारंभ हुई। परम वंदनीया माताजी जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट अपने गुरु के लिए निभानी थी, उन्होंने यहीं भाव भरे आतिथ्य से सबको अपना बनाया। हर दुखी-पीड़ित को सांत्वना देकर ममत्व भरे परामर्श से गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई संदेह नहीं है। विचार-क्रांति के बीज इसी भूमि में ऋषियुग्म ने बोए और सींचे हैं। भावात्मक क्रांति में ऋषियुग्म के असीम स्नेह को परिजन आज भी नहीं भूल पाते हैं।

आज १० लाख से अधिक संख्या में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है। इस स्थान पर दर्शनार्थी परमपूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के सूक्ष्म रूप में उपस्थित होने का अनुभव करते हैं। परमपूज्य गुरुदेव द्वारा लिखा गया, बोला गया एक-एक शब्द यहाँ से प्रकाशित ७० बड़े ग्रन्थों में वाङ्मय का प्रकाशन एवं प्रसार-वितरण यहीं से हो रहा है। पीड़ित और गरीब की सेवा के लिए यहाँ एक औषधालय

चलाया जाता है। जहाँ आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एलोपैथिक, यज्ञचिकित्सा, योग-प्राणायाम, फिजियोथैरेफी, मनोचिकित्सा आदि की व्यवस्था से सैकड़ों पीड़ितजन यहाँ से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं।

## गायत्री तपोभूमि, मथुरा

परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया। एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में हिमालय के महान सिद्धयोगी की धूनी से ७०० वर्ष पुरानी अखण्ड अग्नि स्थापित की गई तथा एक गायत्री महाशक्ति का मंदिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन, जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पूज्य गुरुदेव की साधना स्थली व प्रातःकाल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी, तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्मभूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहाँ पर १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में जून १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्र कुण्डीय यज्ञायोजन संपन्न हुए। श्रेष्ठ नर रत्नों का चयन कर, गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा संपन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलंबन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत १९६४ से आरंभ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य

गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अब वह साधना स्थली में परिवर्तित कर दिया गया है।

मंदिरों एवं आश्रमों को देवस्थान कहलाने का गौरव देव प्रतिमाओं की अपेक्षा दैवी प्रवृत्तियों के प्रसारण केंद्र के नाते दिया जाता रहा है। गायत्री तपोभूमि की स्थापना इसी पुण्य परंपरा को पुनर्जीवित तथा व्यावहारिक बनाने के महान उद्देश्य से की गई है। प्राण ऊर्जा को दिव्य वातावरण में उभारने के लिए पूज्यवर ने २४ वर्ष कठोर तप, श्यामा गाय को जौ खिलाकर, गोबर के साथ निकले हुए जौ को साफ करके, २ रोटी बनाकर छाछ के साथ सेवन करके चौबीस-चौबीस लक्ष जप के चौबीस गायत्री महापुरश्चरण किए हैं। वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने ३०.५.१९५३ से २२.६.१९५३ तक उपवास (मात्र गंगाजल लेकर) किया तथा वेदमाता, देवमाता, विश्वमाता गायत्री की स्थापना एवं प्राण-प्रतिष्ठा की। इस महान अनुष्ठान के अंतर्गत अनेक साधकों द्वारा २४ लाख गायत्री मंत्र का जप, सवा लाख गायत्री चालीसा का सस्वर पाठ, यजुर्वेद, गीता, रामायण का पाठ, गायत्री सहस्रनाम, गायत्री कवच, रुद्राष्टाध्यायी एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ, महामृत्युंजय जप, ६० हजार गायत्री मंत्र से आहुतियाँ, १२५ करोड़ गायत्री मंत्र लेखन की स्थापना आदि महान कार्य का संपादन बड़ी ही भावना के साथ संपन्न किया गया।

इस महान अभियान को गति देने हेतु उनके गुरुदेव ने दो अमूल्य रत्न (वस्तु) उन्हें प्रदान किए। जिसमें अखण्ड दीप तथा अखण्ड अग्नि का प्रमुख स्थान है। जब तक पूज्यवर मथुरा में रहे, यह अखण्ड दीप घीयामण्डी में जलता रहा। अब शांतिकुंज में प्रज्वलित है।

वसंत पंचमी सन् १९५५ से १५ माह तक निरंतर इस यज्ञशाला में गायत्री महायज्ञ के साथ-साथ विशेष सरस्वती यज्ञ, रुद्र यज्ञ, महामृत्युंजय यज्ञ, विष्णु यज्ञ, शतचंडी यज्ञ, नवग्रह यज्ञ, चारों वेदों

के मंत्र यज्ञ, ज्योतिष्टोम, अग्निष्टोम आदि यज्ञ एक-एक माह तक होते रहे। इन यज्ञों की पूर्णाहुति २०.४.१९५६ से २४.४.१९५६ तक नवरात्र के समय चल रहे १०८ कुण्डीय (नरमेध यज्ञ) महायज्ञ से हुई। इसमें ५-६ हजार व्यक्तियों द्वारा १२५ लाख आहुतियाँ दी गईं तथा पूर्ण रूप से लोकमंगल के लिए जीवनदानियों की शृंखला इसी महायज्ञ से आरंभ हुई। इसी अवसर पर गुरुदेव-माताजी द्वारा जेवर, पुस्तक, प्रेस, जमीन आदि भौतिक पदार्थ गायत्री माता को दान किए गए।

२३.११.१९५८ से २६.११.१९५८ तक इस युग के महानतम सहस्र कुण्डीय गायत्री यज्ञ का संपादन हुआ जिसमें ४ लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। २४ लाख गायत्री मंत्र की आहुतियां दी गईं, सवा लाख गायत्री मंत्र लेखन, २४ करोड़ गायत्री मंत्र जप एवं सवा लाख गायत्री चालीसा पाठ किए गए।

१९७१ में पूरे भारतवर्ष में पाँच सहस्र कुण्डीय यज्ञ संपन्न हुए, जिसका संचालन इसी सिद्धपीठ के द्वारा किया गया। बहराइच (उ.प्र.), महासमुन्द (म.प्र.), पोरबंदर (गुजरात), भीलवाड़ा (राजस्थान), टाटानगर (बिहार) में यज्ञ संपन्न हुए। इसके बाद ही यहाँ से भारतीय संस्कृति के उत्थान एवं धर्म-प्रचार के लिए साधकों को प्रशिक्षण देकर देश के कोने-कोने में भेजा गया।

अवतारी, महापुरुषों की शृंखला की पुनरावृत्ति के अंतर्गत पूज्य गुरुदेव भी २० जून १९७१ को इस सिद्धपीठ को छोड़कर शांतिकुंज, हरिद्वार चले गये, परंतु उनकी सूक्ष्म प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में यहाँ के व्यवस्थापकों एवं कार्यकर्ताओं के द्वारा अभी भी युगांतरीय चेतना को जन-जन तक पहुँचाने हेतु अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

गायत्री तपोभूमि मथुरा की एक शाखा गुजराती भाषा में प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु अहमदाबाद में गायत्री ज्ञानपीठ, पाटीदार सोसाइटी, जूनावाडज में स्थित है। गायत्री ज्ञानपीठ अहमदाबाद का

संचालन युग निर्माण योजना, मथुरा द्वारा ही होता है। गायत्री तपोभूमि के प्रांगण में निम्नलिखित प्रकल्प एवं विभाग कार्यरत हैं।

**(१) गायत्री माता का मंदिर एवं महाकाल का मंदिर—**

सिद्धपीठ के मंदिर में गायत्री माता के मंदिर की स्थापना की गई है तथा अगल-बगल के कक्ष में क्रमशः पूज्यवर गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी की प्रतिमाओं एवं चरण पादुकाओं की स्थापना की गई है। पूज्य गुरुदेव के कमरे में २४०० तीर्थों का जल-रज तथा अस्थि कलश भी रखा गया है। इसके साथ ही वंदनीया माताजी के कमरे में २४०० करोड़ मंत्रलेखन की स्थापना है। मंत्र-लेखन साधना का एक आंदोलन सारे देश में निरंतर चल रहा है। यहाँ महाकाल का मंदिर भी स्थित है। जहाँ प्रति वर्ष महाशिवरात्रि पर अखण्ड रामायण पाठ सहित दो दिवसीय भव्य आयोजन किया जाता है।

**(२) अखण्ड जप एवं यज्ञ—**

मंदिर के प्रांगण में प्रातः आरती से सायं आरती तक अखण्ड जप चलता रहता है, जिसका सीधा प्रभाव वायुमंडल पर पड़ता है। इस जप का लाभ अनेक समस्या से ग्रसित परिजनों को मिलता रहा है। अखण्ड अग्नि में प्रतिदिन प्रातः यज्ञशाला में यज्ञ होता है जिसमें सभी लोग शामिल होते हैं।

**(३) निःशुल्क संस्कारों की व्यवस्था—**

धर्मतंत्र से लोकशिक्षण के अनेकानेक कार्यक्रम यहाँ से चलते हैं, जिसमें भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पुरुष को पुरुषोत्तम की भूमिका में प्रतिष्ठापित करने वाले संस्कार बहुत प्रभावशाली ढंग से कराने की सुगम व्यवस्था आश्रम में है। दूर-दूर से लोग दिव्य वातावरण में संस्कार कराने बहुधा पहुँचा करते हैं।

**(४) युग निर्माण विद्यालय—**

युग निर्माण विद्यालय में १६ से २० वर्ष के कक्षा १० उत्तीर्ण छात्र १० माह के प्रशिक्षण में यज्ञ, कर्मकांड, संस्कार, संगीत,

कंप्यूटर, ऑफसेट, प्रिंटिंग, वाइंडिंग, लेमीनेशन एवं स्क्रीन प्रिंटिंग उद्योग, बिजली के उपकरण बनाना, रेडियो, ट्रांजिस्टर और टेलीविजन बनाना आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर क्षेत्र में समाज-सेवी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

**(५) युग साहित्य का प्रकाशन—**

परमपूज्य गुरुदेव ने युग व्यास, वसिष्ठ तथा विश्वामित्र की तरह कार्य किया है एवं समाज को ऊँचा उठाया है। उन्होंने गायत्री विद्या, उपासना, साधना, आराधना, अध्यात्म, विज्ञान, बाल-निर्माण, स्वास्थ्य संवर्धन, आत्मचिंतन, परिवार-निर्माण, विचारक्रांति, कथा, कर्मकांड, धर्मतंत्र से लोक शिक्षण, नैतिक शिक्षा, नारी जागरण, प्रज्ञापुराण, आर्षग्रंथ आदि का लेखन किया है, जिसे यहाँ हर समय मानव-मात्र के कल्याण के लिए उपलब्ध कराया गया है।

**(६) नि:शुल्क आवास—**

गायत्री तपोभूमि में युग निर्माण मिशन के परिजन, कार्यकर्त्ता, विद्यार्थी एवं अतिथियों के लिए नि:शुल्क गायत्री, दुर्वासा , भगवती, सरस्वती, हिमालय, प्रज्ञा, साधक निवास आदि भवन हैं

भवनों का निर्माण परमपूज्य गुरुदेव के समय से आज तक निरंतर होता ही रहा है, किन्तु कण-कण में उन्हीं की ही प्राण-चेतना का अनुभव किया जा सकता है।

**(७) वंदनीया माताजी का भोजनालय—**

गायत्री तपोभूमि में वंदनीया माताजी के चौके में सभी के लिए नि:शुल्क भोजन की व्यवस्था होती है। शुद्ध सात्विक भोजन प्रात: ११ बजे से तथा सायं ६-३० से आरम्भ होता है। अतिथि, शिविरों में आने वाले परिजन एवं युग निर्माण विद्यालय के छात्र भोजनालय में भोजन ग्रहण करते हैं।

**(८) युग निर्माण योजना प्रेस—**

गायत्री तपोभूमि की अपनी प्रिंटिंग प्रेस हैं, जिनमें बड़ी रोटरी मशीनें, दो रंग वाली तथा एक पाँच रंगों वाली ऑफसेट मशीनें हैं।

स्वचालित बाइंडिंग मशीनें भी हैं, जिसमें तीव्र गति से पुस्तकों की बाइंडिंग हो जाती है। युग निर्माण योजना द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ तथा पुस्तकों का कंपोजिंग कम्प्यूटर कक्ष में तथा छपाई का कार्य प्रेस में होता है

**(९) पत्रिका प्रकाशन—**

गायत्री तपोभूमि से दो मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। 'युग निर्माण योजना' मासिक हिंदी में तथा 'युग शक्ति गायत्री' गुजराती में प्रकाशित होती है। इनका वार्षिक शुल्क क्रमशः ४२-०० तथा ६५-०० रुपए है।

**(१०) सद्वाक्यों का प्रकाशन—**

मिशन के विचारक्रांति अभियान के अंतर्गत प्रेरणाप्रद सद्वाक्यों के विभिन्न आकार के पोस्टर, चित्र एवं स्टीकर प्रकाशित किए जाते हैं। ऐसे ही सद्वाक्य आश्रम की दीवारों पर भी लिखे हुए हैं। ये दीवारें बोलती दीवारें हैं, जो सदा रास्ता चलते लोगों को शिक्षा देती रहती हैं। स्टीकर्स एवं पोस्टर्स घरों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों, कार्यालयों एवं स्टेशनों आदि स्थानों पर लगाने का अभियान देशभर में चलाया जाता है।

**(११) शिविरों का आयोजन—**

गायत्री तपोभूमि प्राचीन काल से ऋषियों की तपस्थली रही है। अतः यहाँ के दिव्य वातावरण में साधना करने का लाभ अधिक मिलता है। यहाँ निरंतर प्रतिमाह तीन ९ दिवसीय साधना शिविर तथा ४० दिवसीय साधना शिविर लगते रहते हैं। आश्रम के अनुशासन में साधना करने वाले पात्र साधकों का इन शिविरों में स्वागत है। विद्यालयों के ग्रीष्मावकाश में छात्र-छात्राओं एवं युवक युवतियों के शिविर भी आयोजित किए जाते हैं।

**(१२) हवन सामग्री निर्माण—**

गायत्री तपोभूमि में हवन सामग्री का निर्माण बड़े पैमाने पर होता है। यहाँ हवन सामग्री की शुद्ध जड़ी-बूटियों के संग्रह हेतु

भांडागार है। स्वचालित मशीन से हवन सामग्री तैयार की जाती है। यह हवन सामग्री शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित होती है और सस्ते दर पर देश भर में पहुँचाई जाती है।

### (१३) दातव्य चिकित्सालय—

गायत्री तपोभूमि के आश्रम में आश्रमवासियों, गरीबों, असहायों के लिए एक चिकित्सालय है, जहाँ आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एलोपैथिक, योग प्राणायाम, प्राकृतिक चिकित्सा, फिजियोथैरेपी तथा पैथोलोजी का कार्य कुशल एवं योग्य चिकित्सकों तथा सहायकों के द्वारा किया जाता है।

### (१४) विभिन्न विभाग—

आश्रम की सुचारु व्यवस्था के लिए विभिन्न विभागों के आधुनिक कार्यालय हैं। आश्रम में इण्डियन ओवरसीज बैंक की शाखा एवं डाकखाना भी है। हिंदी विभाग (युग निर्माण योजना पत्रिका), गुजराती विभाग (युग शक्ति गायत्री गुजराती पत्रिका), डाक विभाग, लेखा विभाग, कम्प्यूटर विभाग, एकाउण्ट विभाग, शाखा विभाग, मंत्र लेखन विभाग, पंजीयन विभाग, साहित्य वितरण एवं साहित्य स्टाल, विचारक्रांति अभियान विभाग, हवन सामग्री चक्की, प्रेस एवं प्रकाशन विभाग, स्टोर विभाग के द्वारा कार्य सुचारु रूप से संचालित होता रहता है।

### (१५) सप्तसूत्री आन्दोलन—

युग निर्माण योजना से सात आंदोलनों का सूत्रपात किया गया है—(१) साधना आंदोलन (२) शिक्षा (३) स्वावलंबन (४) पर्यावरण (५) नारी जागरण (६) स्वास्थ्य (७) कुरीति उन्मूलन व्यसन मुक्ति। इसके अतिरिक्त पूज्य गुरुदेव ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम दिए हैं। उनका भी संचालन यहीं से होता है। इन कार्यक्रमों की पुस्तकें भी प्रकाशित की गई हैं।

### (१६) ठंढे जल की प्याऊ—

आश्रम में अनेक ठंढे जल के कूलर लगे हैं, जहाँ यात्रियों के लिए ठंढा जल पीने हेतु उपलब्ध है।

## शांतिकुंज हरिद्वार

शांतिकुंज, सप्तसरोवर क्षेत्र में हरिद्वार-ऋषिकेश मार्ग पर सड़क के किनारे स्टेशन से छह किलोमीटर दूरी पर स्थित एक विशाल दर्शनीय गायत्री तीर्थ है।

हिमालय की छाया एवं गंगा की गोद में विनिर्मित यह आश्रम युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा की प्रचंड तप साधना के संस्कारों से अनुप्राणित है। यहाँ पूज्य गुरुदेव सन् १९७१ से महाप्रयाण १९९० तक तथा वंदनीया माताजी १९९४ तक रहे।

भारतीय संस्कृति के तत्त्वदर्शन, गायत्री एवं यज्ञ के तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने वाला जाग्रत तीर्थ लाखों गायत्री साधकों का गुरुद्वारा है। यहाँ पर गायत्री माता का एक भव्य मंदिर तथा सप्तऋषियों की प्रतिमाओं की स्थापना है।

गायत्री साधक यहाँ आकर पूजा-उपासना का तत्त्वदर्शन समझते और जीवन लक्ष्य की ओर बढ़ चलने के लिए अग्रसरित होते हैं। परमपूज्य गुरुदेव आचार्य पं० श्रीराम शर्मा द्वारा प्रज्वलित किया गया अखण्ड दीप सन् १९२६ से अहर्निश अपनी ऊर्जा विकीर्ण कर रहा है, जो इस विशाल गायत्री परिवार की सम्पूर्ण उपलब्धियों का मूल स्रोत है। इसके सान्निध्य में २४०० करोड़ से अधिक गायत्री जप संपन्न हो चुके हैं।

यहाँ हिमालय की एक दिव्य विराट प्रतिमा स्थापित की गई है, जिसमें सभी तीर्थों का दिग्दर्शन साधकों को वहाँ के इतिहास की पृष्ठभूमि के साथ मल्टीमीडिया प्रोजेक्शन पर किया जाता है। प्रायः साठ फुट चौड़ी, पंद्रह फुट ऊँची प्रतिमा के समक्ष बैठकर ध्यान करने का अपना अलग ही आनंद है। समीप स्थित देव संस्कृति दिग्दर्शन में मिशन के वर्तमान स्वरूप व भावी योजनाओं का चित्रण किया गया है। आश्रम की यज्ञशालाओं में नित्य नियमित लगभग एक हजार साधक गायत्री यज्ञ संपन्न

करते हैं। सभी प्रकार के संस्कार जो भारतीय संस्कृति के अंतर्गत आते हैं, यथा अन्नप्राशन, विद्यारंभ, यज्ञोपवीत, विवाह, वानप्रस्थ तथा श्राद्धकर्म—यहाँ नि:शुल्क संपन्न कराए जाते हैं। शांतिकुंज को एक आध्यात्मिक सेनिटोरियम के रूप में विकसित किया गया है, जहाँ शरीर, मन व अन्त:करण को स्वस्थ-समुन्नत बनाने का व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया जाता है।

यहाँ एक भटके हुए देवता का मंदिर भी है। गायत्री साधक यहाँ के साधना प्रधान नियमित चलने वाले सत्रों में भाग लेकर नवीन प्रेरणाएँ तथा दिव्य प्राण ऊर्जा के अनुदान पाकर तथा सन् १९८५ में स्थापित प्रखर प्रज्ञा (पूज्यवर का प्रतीक स्मारक) एवं सजल श्रद्धा (माताजी का प्रतीक स्मारक) के दर्शन-प्रणाम को अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति में सहायक पाते हैं। शांतिकुंज के कण-कण में इनकी प्राण चेतना व्याप्त है, लेकिन अखण्ड दीप की लौ एवं सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा में वह घनीभूत हुई है।

सौर ऊर्जा की उपलब्धियों पर आधारित तथा पवन ऊर्जा से संचालित उपकरण यहाँ स्थापित हैं, जिनसे वैकल्पिक ऊर्जा का ग्रामीण क्षेत्र के परिजनों को शिक्षण दिया जाता है।

शांतिकुंज के दिव्य जड़ी-बूटी उद्यान में ३०० से भी अधिक प्रकार की दुर्लभ-सर्वोपयोगी वनौषधियाँ लगाई गई हैं। विश्वभर से वैज्ञानिक यहाँ आते व यहाँ का वनौषधि उद्यान देखकर जाते हैं। एक प्रयोगशाला में समय-समय पर इन जड़ी-बूटियों की जाँच-पड़ताल होती रहती है व साधना सत्र में भाग ले रहे साधकों को निर्धारणानुसार कल्क सेवन कराया जाता है।

शांतिकुंज द्वारा आयुर्वेद का पुनर्जीवन कर पचास से अधिक वनौषधियों के चूर्ण व क्वाथ को जन-जन तक कम मूल्य पर पहुँचाया गया है। सभी आगंतुकों की शारीरिक, मानसिक जाँच-पड़ताल निष्णात चिकित्सकों द्वारा यहाँ नि:शुल्क की जाती है एवं आहार, साधना तथा वनौषधि संबंधी परामर्श दिया जाता है।

गायत्री महाविद्या की शब्दशक्ति एवं यज्ञ ऊर्जा पर वैज्ञानिक अनुसंधान हेतु एक आधुनिकतम ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की यहाँ स्थापना की गई है। गायत्री एवं यज्ञ विज्ञान पर चिरपुरातन से लेकर अब तक लिखा साहित्य इस संस्थान में संकलित किया गया है तथा बहुमूल्य प्रयोगशाला में मंत्र विद्या एवं यज्ञ प्रक्रिया के परीक्षण नियमित रूप से होते रहते हैं। यहाँ का पत्राचार विद्यालय भारत व विश्वभर में बैठे जिज्ञासुओं-प्रज्ञा परिजनों को दैनंदिन जीवन की उलझनों को सुलझाने का मार्गदर्शन देता है।

शांतिकुंज के प्रयत्नों से देशभर में तीन हजार से अधिक भव्य प्रज्ञा मंदिर बने हैं। इनके माध्यम से जन-जन में आस्था, विस्तार तथा नैतिक पुनरुत्थान के कार्यक्रम दस लाख लोकसेवी कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से चलाते हैं।

अध्यात्म के गूढ़ विवेचनों की सरल व्याख्या कर उन्हें जीवन में कैसे उतारा जाय? अपने चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में उत्कृष्टता लाकर व्यक्तित्व को कैसे प्रभावकारी बनाया जाय? इसका सतत प्रशिक्षण यहाँ के नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्रों में चलता है, जो यहाँ वर्ष भर संपादित होते रहते हैं। ये सत्र १ से ९, ११ से १९, २१ से २९ की तारीखों में प्रति माह चलते हैं। लोकसेवियों का सर्वांगपूर्ण शिक्षण करके धर्मतंत्र से लोकमानस का परिष्कार यहाँ का एक विशिष्ट कार्यक्रम है। एक मास के युग शिल्पी सत्रों में प्राय: पाँच सौ से अधिक भावनाशील कार्यकर्त्ता नैतिक, बौद्धिक तथा सामाजिक क्रांति का परिपूर्ण शिक्षण लेने प्रतिमास आते हैं। शिक्षण, निवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क है।

पाँच दिवसीय मौन अंत: ऊर्जा जागरण सत्र यहाँ की विशेषता है। इसमें ६० साधक प्रति सत्र उच्चस्तरीय साधना करते हैं। ये आश्विन से चैत्र नवरात्र तक चलते हैं।

केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारों के विभिन्न पदाधिकारियों को यहाँ नैतिक,बौद्धिक तथा व्यक्तित्व परिष्कार का शिक्षण पाँच दिवसीय सत्रों में दिया जाता है। अब तक अस्सी हजार से अधिक अधिकारीगण इन मूल्यपरक शिक्षणों से लाभ पा चुके हैं।

जन-जन में सुसंस्कारिता संवर्द्धन तथा आस्था संवर्द्धन हेतु शांतिकुंज से प्रज्ञा टोलियाँ देश-विदेश में भेजी जाती हैं। एक हजार से अधिक वानप्रस्थी परिव्राजक पूरे देश का सतत भ्रमण करते रहते हैं। स्थान-स्थान पर साधना सत्र आयोजित कर ये कार्यकर्त्ता शांतिकुंज की दैवी चेतना का विस्तार जन-जन तक करते हैं।

गरीबी उन्मूलन की आर्थिक क्रांति के अंतर्गत औसत भारतीय स्तर की आजीविका उपार्जन हेतु यहाँ एक स्वावलंबन विद्यालय विनिर्मित है, जिसमें छोटे कुटीर उद्योगों से उपार्जन का नि:शुल्क शिक्षण दिया जाता है।

बंदी जीवन में सुधार के लिए गायत्री परिवार द्वारा देशभर में कारागारों में कैदियों के जीवन में सुधार के लिए विभिन्न कार्यक्रम आंदोलन के रूप में चलाए जा रहे हैं।

देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के क्रम में शांतिकुंज द्वारा देश-विदेश में २७ अश्वमेध महायज्ञ, एक वाजपेय यज्ञ एवं दो विराट् महापूर्णाहुति कार्यक्रम आँवलखेड़ा व हरिद्वार में संपन्न किए गए हैं। न केवल पर्यावरण अपितु अन्य वैज्ञानिक प्रयोगों में भी इन यज्ञों को बहुत महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। इनवायरनमेंटल एण्ड टेक्निकल कंसेल्टेण्ट्स के निदेशक ने उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की सहायता से इन अश्वमेध यज्ञों के पर्यावरण पर प्रभाव का अनुसंधान करके बताया कि प्रदूषण इनसे कम होता है। अब यज्ञोपैथी के प्रयोगों को विश्वविद्यालय में एक आधुनिक रूप दिया जा रहा है।

समूचे राष्ट्र की कुण्डलिनी जागरण के लिए परम पूज्य गुरुदेव ने युग संधि महापुरश्चरण की घोषणा की थी, इसके अंतर्गत लगभग चौबीस लाख साधकों ने प्रतिदिन लगभग २४० करोड़ गायत्री मंत्र का महानुष्ठान किया। इसकी प्रथम पूर्णाहुति ३ से ७ नवम्बर ९५ में पूज्य गुरुदेव की जन्मस्थली आँवलखेड़ा आगरा में की गई। इसमें प्राय: ५० लाख परिजनों ने भाग लिया। दूसरी पूर्णाहुति सन् २००० में सृजन संकल्प विभूति महायज्ञ के रूप में शांतिकुंज में ६ से ११ नवम्बर की तारीखों में संपन्न हुई। इसके पूर्व नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में ८ अक्टूबर २००० को विराट विभूति ज्ञान यज्ञ भी संपन्न हुआ।

लगभग एक हजार उच्च शिक्षित कार्यकर्त्ता शांतिकुंज में स्थायी रूप में सपरिवार निवास करते हैं। निर्वाह हेतु वे औसत भारतीय स्तर का भत्ता मात्र संस्था से लेते हैं।

इस प्रकार शांतिकुंज एक ऐसी स्थापना है, जिसे सच्चे अर्थों में युग तीर्थ कहा जा सकता है। यहाँ आने वाला व्यक्ति कृतकृत्य होकर जाता है एवं नैसर्गिक सौंदर्य तथा आध्यात्मिक ऊर्जा से अनुप्राणित वातावरण में बार-बार आने के लिए लालायित रहता है। इस संस्था के दर्शनार्थ सहर्ष आमंत्रण है।

जनसाधारण में उमंग व प्रेरणा भरने के लिए यहाँ के आधुनिकतम वीडियो स्टूडियो में नाटक, गीत, एक्शनसांग व छोटी-मोटी टेली फिल्में तैयार कर जन-जन तक प्रज्ञा वाहनों के माध्यम से बड़े परदे पर दिखाने के लिए पहुँचाई जाती हैं।

नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्रांति का उद्देश्य लेकर प्रतिवर्ष टोलियाँ देशभर में भेजी जाती हैं, जो संगीत, प्रवचन, यज्ञ, कर्मकाण्ड के माध्यम से कार्य करती हैं। ये १९८२ से निरंतर चल रही हैं।

## ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

शांतिकुंज से लगभग आधा किलोमीटर दूर गंगातट पर स्थित इस संस्थान के स्वरूप को चार बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है—१. आदिमाता गायत्री की चौबीस शक्ति धाराओं के मंदिर, २. वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रयोगशाला, ३. संदर्भ पुस्तकालय, ४. समर्पित वैज्ञानिकों का समुदाय।

**भगवती गायत्री की चौबीस शक्ति धाराओं के मंदिर—** गायत्री महामंत्र के चौबीस अक्षरों में चौबीस प्रकार की साधनाओं का विधान-विज्ञान समाविष्ट हैं। इनमें बारह गायत्री की वैदिक साधनाओं की दिशा निर्देशित करती हैं। इनके अतिरिक्त बारह गायत्री की तांत्रिक साधनाओं की अधिष्ठात्री हैं। युगऋषि पूज्य गुरुदेव ने अपने साधना जीवन में इन सभी चौबीस शक्तियों के परम रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया था। शोध संस्थान के भूमितल पर इन चौबीस शक्तियों के भव्य मंदिर हैं, जिन्हें स्वयं गुरुदेव ने १९७९ की ५ जून गायत्री जयन्ती की पावन वेला में प्रतिष्ठित किया था। प्रत्येक मंदिर के दोनों ओर उस विशेष महाशक्ति की उपासना में प्रयोग किए जाने वाले यंत्र-मंत्र एवं प्रयोगविधि तथा उसकी फलश्रुति का सांकेतिक विवरण दिया हुआ है।

मंत्र-विज्ञान एवं यंत्र-विज्ञान के सभी तत्त्वों का समग्र समावेश होने के कारण ये सभी मंदिर अध्यात्म विद्या के जिज्ञासुओं को विशिष्ट अनुभूतियाँ प्रदान करते हैं।

## महाप्रज्ञा का चौबीस शक्तियों का संक्षिप्त परिचय

**(१) आद्यशक्ति**—अर्थात सृष्टि की मूल चेतना। आदिदेव ॐकार के रूप में इसे ही प्रथम और सर्वोपरि पूज्य माना गया है। पुरुषवाचक संबोधन में इसे परंब्रह्म भी कहते हैं। यहाँ एक मुख्य मंदिर है, जिसे ज्ञान मंदिर के रूप में विनिर्मित किया गया है।

समग्र गायत्री महाविद्या के मर्म को इस एक में भी समझा जा सकता है।

**(२) ब्राह्मी**—अर्थात महाविद्या, सद्ज्ञान, सद्विचार। सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों के प्रसुप्त बीजों को जगाने-उगाने वाली महाशक्ति।

**(३) वैष्णवी**—व्यवस्था बुद्धि का पर्याय। संसार की सुव्यवस्था करने वाली, परिपोषण करने वाली विश्वंभर शक्ति।

**(४) शांभवी**—अवांछनीयता का निवारण करने वाली परिवर्तनकारी शक्ति, सृष्टि-संतुलन हेतु अनिवार्य प्रलयंकर शक्ति, जो अपने प्रभाव से व्यक्ति के जीवन में गुण, कर्म, स्वभाव का परिष्कार करती है।

**(५) वेदमाता**—ज्ञान-विज्ञान की समस्त ज्ञात-अविज्ञात धाराओं की गंगोत्री, ज्ञान की जननी वेदगर्भा-वेदविद्या की कुंजी।

**(६) देवमाता**—देवत्व को जन्म देनेवाली देवोपम स्तर की मनःस्थिति बनाने वाली देवी।

**(७) विश्वमाता**—सार्वभौम संस्कृति के संविधान का निरूपण करने वाली, वसुधैव कुटुम्बकम् के दर्शन को सार्थक करने वाली शक्ति।

**(८) ऋतंभरा**—सत्य-असत्य, औचित्य-अनौचित्य में ऋत का वरण करने में साधक को सहायता देने वाली शक्ति।

**(९) मंदाकिनी**—अर्थात गंगा के समान पवित्र, वाह्याभ्यंतर को शुद्ध करने वाली देवी।

**(१०) अजपा**—निश्चल स्थिति-अविचल निष्ठा की सिद्धि देने वाली।

**(११) ऋद्धि**—आत्मिक विभूतियों से व्यक्ति को असाधारण बना देने वाली शक्ति।

**(१२) सिद्धि**—वैभव की अधिष्ठात्री, मनुष्य को प्रामाणिक, समृद्ध-संपन्न बनाने वाली देवी।

**(१३) सावित्री**—अचेतन की रहस्यमयी परतों का अनावरण करने वाली पंचमुखी सावित्री शक्ति।

**(१४) सरस्वती**—बुद्धि को प्रखर और परिष्कृत करने वाली सद्विचारणा की देवी।

**(१५) लक्ष्मी**—अर्थात सर्वतोमुखी संपन्नताप्रदायक शक्ति, जो साधक में "श्री" तत्त्व बढ़ाने वाले गुणों का विकास करती है।

**(१६) महाकाली**—असुरता का संहार करने वाली, मृत्यु की प्रतीक, प्रचंडता-प्रखरता की पर्याय रौद्रशक्ति।

**(१७) कुण्डलिनी**—जीवन की सामान्य ऊर्जा को असामान्य में परिष्कृत कर चमत्कारी सफलताएँ प्रदान करने वाली तंत्रविद्या की अधिष्ठात्री देवी।

**(१८) प्राणाग्नि**—साधक को प्राणवान बनाने वाली, जीवनी शक्ति बढ़ाकर अंत: सामर्थ्य बढ़ाने वाली शक्ति।

**(१९) भुवनेश्वरी**—नियम-मर्यादाओं के परिपालन की कसौटी पर विश्व-वैभव को अधिष्ठाता बना देने वाली शक्ति।

**(२०) भवानी**—संगठन कौशल का धनी बनाने वाली, व्यक्ति को युग-नेतृत्व सौंपने वाली देवी विभूति।

**(२१) अन्नपूर्णा**—वह चेतनाशक्ति जिसकी कृपा से साधक को अभाव नहीं सताने पाते। अर्थ-सन्तुलन हेतु सद्बुद्धि देने वाली शक्ति।

**(२२) महामाया**—भ्रांतियों का निवारण करने वाली, भव-बंधनों से मुक्ति दिलाने वाली।

**(२३) पयस्विनी**—भूलोक की कामधेनु, जिसकी कृपा से साधक में ब्रह्मतेज बढ़ता है, कोई अभाव नहीं रहता।

**(२४) त्रिपुरा**—ओजस्, तेजस् और वर्चस् बढ़ाने वाली, पापों से उबारकर महान बनाने वाली सामर्थ्य देने वाली देवी।

## वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रयोगशाला

आधुनिकतम कम्प्यूटराइज्ड उपकरणों से सुसज्जित इस प्रयोगशाला के मुख्यतया तीन आयाम हैं—१. यज्ञ चिकित्सा की प्रयोगशाला, २. आध्यात्मिक साधनाओं द्वारा शरीर, प्राण और मन अर्थात समग्र जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का मापन करने वाली प्रयोगशाला, ३. वनौषधि अनुसंधानशाला और उससे जुड़ा दुर्लभ जड़ी-बूटियों का वनौषधि उद्यान।

प्रयोगशाला के सभी कक्ष अत्याधुनिक उपकरणों से सज्जित हैं। इनमें कई उपकरणों को शोध वैज्ञानिक अति दुर्लभ मानते हैं, इनमें आभामण्डल मापन से लेकर शरीर की जैव ऊर्जा एवं विभिन्न रसायनों का विश्लेषण करने वाले यंत्र सम्मलित हैं, सभी कम्प्यूटराइज्ड हैं। यही वजह है कि यह प्रयोगशाला समूचे देश में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। वैज्ञानिक अध्यात्म विषय के विभिन्न वैज्ञानिक आयामों पर शोध करने वालों के लिए यह प्रयोगशाला महातीर्थ का स्थान रखती है। जहाँ देश और विदेश के विभिन्न भागों के शोधकर्मी आकर शोधकार्य करना अपना सौभाग्य मानते हैं। प्रयोगशाला की ही भाँति यहाँ का जड़ी-बूटी उद्यान भी अतिविशिष्ट है, जहाँ दो सौ से अधिक अति दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ लगाई गई हैं।

## संदर्भ पुस्तकालय

इस पुस्तकालय में हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई, बौद्ध, ताओ आदि विभिन्न धर्मों के साहित्य के अतिरिक्त तंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद दर्शन, इतिहास, संस्कृति, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, खगोलशास्त्र आदि अनेक विषयों की लगभग ५०,००० पुस्तकों का बहुमूल्य संग्रह है। इन संदर्भ ग्रंथों के अतिरिक्त पुस्तकालय में विविध दुर्लभ पाण्डुलिपियों के अलावा लगभग १०० विविध विश्वकोश संग्रहीत हैं। इन्हीं के साथ ३००

विश्वविख्यात पत्रिकाएँ अपने साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आदि क्रम से आती हैं।

## ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के विषय

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के विषय निम्नलिखित हैं—

१.ध्यान के द्वारा आधि (मानसिक रोग), व्याधि (शारीरिक रोग) निवारण।

२.आसन-प्राणायाम, बंध,मुद्रा आदि से शरीर के गुह्य-प्रसुप्त केंद्रों का जागरण।

३.सोऽहम् साधना, अनाहत नाद का सूक्ष्म स्वर विज्ञान।

४.सात्विक, राजसिक एवं तामसिक भोजन का मन पर प्रभाव।

५.शब्द शक्ति, मन शक्ति का मनोबल बढ़ाने, चक्रों के जागरण में उपयोग।

६.संगीत स्वरलहरियों का तनाव निवारण में उपयोग।

७.अग्निहोत्र (यज्ञ) द्वारा शारीरिक व मानसिक रोगों का उपचार (यज्ञोपैथी)।

८.यज्ञ का वातावरण पर प्रभाव।

९.हिमालय की दुर्लभ जड़ी-बूटियों पर प्रयोग एवं आयुर्वेद का पुनर्जीवन।

१०.सूर्य चिकित्सा विज्ञान।

११.प्राण चिकित्सा विज्ञान।

१२.वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर प्रयोग व परीक्षण।

वनौषधियों का वाष्पीकरण स्थिति में प्रयोग रोगों के निदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह लाभ हमारे यहाँ अग्निहोत्र के माध्यम से दिया जाता है। अग्निहोत्र में तैलीय तत्त्व प्रधान समिधाएँ और हवन सामग्री दोनों का ही प्रयोग होता है। बहुत न्यून मात्रा में घी को भी सम्मिलित किया जाता है। समिधा के रूप में अन्य काष्ठ (जो विशिष्ट गुण संपन्न औषधीय तत्त्वों से संपन्न होते हैं) ही प्रयुक्त होते हैं। ऐसे काष्ठों में शारीरिक रोगों के निवारण की

शक्ति पाई जाती है। आमतौर से आम, पीपल, वट, शमी, चंदन, देवदारू, तगर, विल्व जैसे वृक्षों की लकड़ियाँ ही इस निमित्त अग्नि प्रज्वलन के लिए कार्य में लाई जाती हैं। किस आधार पर किसे प्रमाणिक माना जाए, यह चुनाव शांतिकुंज के वैज्ञानिक कालम क्रोमेटोग्राफी पूरी तरह से कम्प्यूटराईज्ड एक जटिल संयंत्र है, जो औषधियों के सांद्र क्वाथ एवं वाष्पीकृत गैसों का परिपूर्ण विश्लेषण कर उसका एक ग्राफ पर आकलन करता जाता है। ज्वलन से पूर्व औषधि युक्त पौधे में क्या-क्या कार्यकारी तत्त्व विद्यमान थे, एवं उस प्रक्रिया से गुजरने के उपरांत उनमें क्या परिवर्तन हुआ? धूम्र में कहीं कार्बन के हानिकारक कण तो विद्यमान नहीं हैं, यह प्रामाणिक जानकारी भी जी.एल.सी.यंत्र दे देता है। वनौषधि यजन प्रक्रिया, धूम्रों को व्यापक बनाकर सुगंध फैलाकर समूह चिकित्सा की विधा है, जो पूर्णत: विज्ञानसम्मत है। गंध प्रधान धूम्र के माध्यम से मस्तिष्क के प्रसुप्त केंद्रों का उद्दीपन, अंदर के हारमोन रस द्रव्यों का रक्त में आ मिलना तथा श्वास द्वारा प्रमुख कार्यकारी औषधीय घटकों का उन ऊतकों तक पहुँच पाना, जो कि जीवनीशक्ति निर्धारण अथवा व्याधि निवारण हेतु उत्तरदायी हैं, ये कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं, जो वनौषधि यजन अर्थात अग्निहोत्र से प्राप्त होती हैं। अग्निहोत्र प्रक्रिया विज्ञान की कसौटी पर कितनी सही है, ब्रह्मवर्चस के वैज्ञानिक भौतिकीय एवं रासायनिक आधार पर यह परीक्षण कर रहे हैं। अपने उद्देश्य में उन्हें महत्त्वपूर्ण सफलताएँ मिल भी रही हैं। अध्यात्म के विज्ञान सम्मत प्रतिपादन हेतु यह शोध संस्थान विश्व में अनूठा है। यहाँ पर हो रही शोधें विश्व भर में बुद्धिजीवियों के लिये एक चुनौती बनी हुई हैं और उनका अध्यात्म के प्रति ध्यान आकर्षित कर रही हैं। विश्व में बढ़ती हुई समस्याओं के लिए आध्यात्मिक मान्यताओं की कितनी अधिक आवश्यकता है? यह तर्क की कसौटी पर, विज्ञान की कसौटी पर खरा उतर रहा है। बड़ी मात्रा में विश्व भर के बुद्धिजीवी

यहाँ से प्रेरणा व मार्गदर्शन लेकर अध्यात्म की ओर झुक रहे हैं। धरती पर स्वर्गीय वातावरण तभी बन सकेगा जब हमारा बुद्धिजीवी वर्ग—प्रतिभाशाली वर्ग आध्यात्मिक मान्यताओं को जीवन में उतारे तथा उसके प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे। ऐसा ब्रह्मवर्चस जैसे शोध संस्थानों के माध्यम से ही संभव है। निकट भविष्य में इस प्रकार के शोध संस्थानों की संख्या व क्षमता बढ़ती रहनी चाहिए।

## ब्रह्मवर्चस के मनीषी-वैज्ञानिक

शोध संस्थान में कार्यरत शोधकर्मियों के दो वर्ग हैं। पहला वर्ग मनीषियों का है—इस वर्ग में वे लोग हैं, जो जीवन के सामाजिक, राजनैतिक एवं दार्शनिक पहलू के अध्ययन तथा शोध में संलग्न हैं, दूसरा वर्ग वैज्ञानिकों का है—इसमें वे लोग हैं, जो यज्ञ चिकित्सा, वनौषधि, अनुसंधान तथा मानवीय व्यक्तित्व पर आध्यात्मिक साधनाओं के प्रभाव पर कार्य कर रहे हैं। इन लोगों की संख्या लगभग ४० है। शिक्षा और योग्यता की दृष्टि से सभी एम.एस-सी., पी-एच.डी., एम.डी., एम.एस. स्तर के हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इनमें से कोई वेतन भोगी कर्मचारी नहीं है, अपितु सभी गुरुदेव के आदर्शों के लिए समर्पित हैं।

## देवसंस्कृति विश्वविद्यालय

यह युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ परमपूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी (अखण्ड ज्योति, मार्च १९६४) का साकार होता दिव्य स्वप्न है। यह उनकी तपश्चेतना का आध्यात्मिक प्रकाश है। यहाँ विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ-साथ आध्यात्मिक अभीप्साएँ भी पूरी होंगी। इस विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के जीवन निर्माण के लिए भरपूर सुयोग और सुअवसर जुटाए गए हैं। यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थीगण अपनी उत्तम कल्पनाओं उत्कृष्ट अरमानों एवं श्रेष्ठ स्वप्नों को बड़ी आसानी से साकार कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के सभी पाठ्यक्रम राष्ट्र के भावी निर्माण को दृष्टि में रखकर बनाए जा रहे हैं, ताकि स्वहित एवं लोकहित के सभी उद्देश्य पूरे हो सकें। यह विश्वविद्यालय न केवल अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए स्वावलंबन एवं रोजगार के अनेक अवसर जुटाएगा, बल्कि देश व संस्कृति के उत्थान एवं विश्व मानवता के कल्याण में इनकी भागीदारी भी सिद्ध करेगा। यहाँ का अध्ययनकाल बालकों के जीवन का स्वर्णिम काल होगा। आध्यात्मिक जीवन शैली और तप साधना से विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की न केवल अंतर्निहित शक्तियाँ जाग्रत होंगी, बल्कि वे उनका सार्थक उपयोग भी कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के संचालकों ने इस विराट योजना के लिए किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता न लेने का निश्चय किया है, साथ ही छात्रों से कोई शुल्क लेना भी स्वीकार नहीं किया है। इस अवधारणा से प्रभावित होकर भारत सरकार ने विगत अगस्त माह में श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज, हरिद्वार को आयकर की धारा ३५ ए.सी. के अंतर्गत १०० प्रतिशत की छूट का नोटिफिकेशन दिनांक २८ अगस्त ०२ को एस.ओ.०९१५ (ई) जारी किया है। इस धारा के अंतर्गत दिये जाने वाले दान की राशि को दानदाता की कर योग्य आय में से सौ प्रतिशत घटाया जाएगा अर्थात उक्त दान राशि को करदाता की कर योग्य आय में नहीं जोड़ा जाएगा।

यहाँ जो कुछ अभी हो रहा है और जो भविष्य में किया जाने वाला है, उसे पूरी तरह से बताने में तो शायद ग्रंथों का कलेवर भी कम पड़ेगा। फिर भी कुछ खास बातें इस प्रकार हैं—

**साधना संकाय** के अंतर्गत प्राचीन ऋषियों, मुनियों, संतों द्वारा की गयी, कही गयी साधना विज्ञान के सत्य को आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन-अध्यापन, शोध एवं शिक्षण का कार्य सुचारु रूप से किया जाएगा।

मंत्र विज्ञान और योग विज्ञान का व्यावहारिक शिक्षण यहाँ दिए जाने की योजना है।

हठयोग, राजयोग, लययोग, मंत्रयोग आदि योग की विभिन्न प्रक्रियाओं एवं साधनाओं को आज के युग के अनुरूप सरल, सुरुचिपूर्ण, वैज्ञानिक एवं प्रभावकारी बनाने के लिए विशेष शोध-परियोजनाएँ संचालित की जाएँगी।

जटिल आदतों, पुराने कुसंस्कारों एवं दुष्प्रवृत्तियों को मनुष्य के अंत:करण से हटाने-मिटाने के लिए साधना विज्ञान की आसान, किंतु वैज्ञानिक तकनीकों का शिक्षण किया जाएगा।

मनुष्य की आंतरिक एवं अतींद्रिय शक्तियों के विकास के लिए शोध एवं शिक्षण की व्यावहारिक योजनाएँ लागू की जाएँगी।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद एवं सर्वधर्म समभाव पर शोधपरक अध्यापन-शिक्षण होगा।

**स्वास्थ्य संकाय** का गठन मनुष्य के संपूर्ण स्वास्थ्य के आदर्श एवं उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

उसमें आयुर्वेद सहित, चुंबक चिकित्सा. फिजियोथैरेपी, योग चिकित्सा एवं प्राण चिकित्सा जैसी अनेकों वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों पर आधारित पाठ्यक्रम चलाए जाएँगे।

जड़ी-बूटी की व्यापक शोध के लिए देश-विदेश के आधुनिकतम उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला बनाई जाएगी।

शारीरिक एवं मानसिक रोगों के निवारण-निराकरण के साथ उन्हें पहले से ही रोकने के लिए प्रभावी तकनीकों की खोज की जाएगी।

चरक एवं जीवक जैसे जन सेवा के लिए समर्पित विशेषज्ञ चिकित्सकों की नयी पीढ़ी तैयार की जाएगी, जो देशवासियों को रोग मुक्त करने के साथ, विदेशों में भारतीय चिकित्सा विज्ञान के गौरव को स्थापित कर सकें।

**शिक्षा संकाय** की योजनाओं का दायरा बहुत व्यापक है। इसमें देश की प्राय: समस्त भाषाओं एवं विदेशों की प्रमुख भाषाओं के

शिक्षण की व्यवस्था जुटाई जाएगी, ताकि समूचे देश एवं समस्त विश्व को देव संस्कृति की संवेदना से आप्लावित किया जा सके।

देव संस्कृति एवं सनातन धर्म के सभी पहलुओं के शोध एवं शिक्षण के साथ विश्व के प्राय: सभी प्रमुख धर्मों में निहित सत्यों एवं सूत्रों की गहन शोध की जाएगी। भावी विश्व के मानव धर्म का प्राकट्य इसी से होना सुनिश्चित है।

कौटिल्य एवं कुमारजीव की परंपरा में देव संस्कृति के संदेश देने वाले संस्कृति दूतों एवं धर्म शिक्षकों की नयी पीढ़ी का निर्माण किया जाएगा।

पुरातन विज्ञान एवं आधुनिक विज्ञान के अनेक उपयोगी पाठ्यक्रमों को लागू किया जाएगा, ताकि देश की युवा पीढ़ी दर्शन, धर्म, संस्कृति एवं साहित्य के साथ आधुनिक विज्ञान में भी प्रशिक्षित हो सके।

**स्वावलंबन संकाय** के द्वारा हताश हो रही युवा पीढ़ी को आशान्वित करने वाली अनेक योजनाओं में नियोजित किया जाएगा।

ग्राम प्रबंधन, चिकित्सालय प्रबन्धन, देवालय प्रबन्धन, विद्यालय प्रबंधन जैसे अनेक नए एवं उपयोगी पाठ्यक्रम लागू किए जाएँगे।

नयी पीढ़ी में पनप रही दूसरे का सहारा ढूँढ़ने वाली वृत्ति को मिटाकर उनमें आत्मनिर्भरता पैदा करने के लिए शोध एवं शिक्षण की परियोजनाएँ लागू की जाएँगी।

देश के विभिन्न क्षेत्रों के अनुरूप रोजगार देने वाले पाठयक्रमों एवं परियोजनाओं की व्यवस्था की जाएगी।

राष्ट्र की युवा पीढ़ी की दशा को सुधारने एवं उन्हें दिशा देने वाले अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम संचालित किए जाएँगे।

## देव संस्कृति विश्वविद्यालय में चलने वाले पाठ्यक्रम

### (अ) स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम

१. एम.ए./एम.एस-सी. नैदानिक मनोविज्ञान।
२. एम.ए. योग विज्ञान एवं मानव उत्कर्ष।
३. एम.एस-सी. एप्लाइड योग एवं होलिस्टिक हेल्थ।
४. एम.ए. पत्रकारिता एवं जनसंचार।
५. एम.ए. भारतीय संस्कृति एवं पर्यटन प्रबंधन।

**अहर्ताएँ**—सभी विषयों में प्रवेश पाने के लिए किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक। न्यूनतम ५० प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। उपर्युक्त कोर्स हेतु आयु सीमा अधिकतम ३० वर्ष।

### (ब) डिप्लोमा पाठ्यक्रम

१. पी.जी. डिप्लोमा मानवीय चेतना एवं योग चिकित्सा।
२. पी.जी. डिप्लोमा पत्रकारिता एवं जनसंचार।

**अहर्ताएँ**—उपर्युक्त विषयों में स्नातक/स्नातकोत्तर परीक्षा में कम-से-कम ५० प्रतिशत अंक होना अनिवार्य है। पी.जी. डिप्लोमा कोर्स हेतु अधिकतम आयु ३० वर्ष।

### (स) प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

| पाठ्यक्रम | आयु सीमा |
|---|---|
| १. व्यवहार विकृतियाँ एवं मनोचिकित्सा | ३० वर्ष |
| २. धर्म विज्ञान | ३० वर्ष |
| ३. मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान | ३० वर्ष |
| ४. समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन | ३० वर्ष |
| ५. एप्लाइड योग एवं हेल्थ | ३० वर्ष |
| ६. ग्राम प्रबंधन | ४० वर्ष |

**अहर्ताएँ—**

१. मेडिकल ग्रेजुएट (बी.ए.एम.एस./एम.बी.बी.एस.)।
२. १०+२ न्यूनतम ४० प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण।
३. मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों की स्नातक डिग्री (५० प्रतिशत अंकों के साथ)।
४. मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों की स्नातक डिग्री (५० प्रतिशत अंकों के साथ)।
५. १०+२+३ न्यूनतम ५० प्रतिशत के साथ उत्तीर्ण।

**नोट**—मात्र 'धर्म विज्ञान' एवं 'ग्राम प्रबंधन' पाठ्यक्रमों के आवेदक के पास यदि ५ वर्ष तक समाज सेवा कार्यों की पुष्टि होती है, तो उन्हें आयु सीमा में ५ वर्ष की छूट दी जाएगी। तब आयु सीमा क्रमशः ३५ वर्ष एवं ४५ वर्ष होगी और केवल 'ग्राम प्रबंधन' पाठ्यक्रम में प्राप्तांकों का प्रतिशत ४५ तक मान्य होगा।

**(द) पंचवर्षीय इंटीग्रेटेड कोर्स-**
**स्नातक (३ वर्ष)+स्नातकोत्तर (२ वर्ष)**

**बी. ए.**—निम्नलिखित में से कोई तीन विषय—

१. योग विज्ञान एवं मानवीय चेतना
२. मनोविज्ञान
३. भारतीय संस्कृति
४. अंग्रेजी साहित्य
५. संस्कृति

**बी. एस-सी.—**

१. योग विज्ञान एवं मानवीय चेतना
२. मनोविज्ञान
३. कम्प्यूटर एप्लीकेशन

**अनिवार्य विषय—**

१. जीवन जीने की कला (संस्कृति के संदर्भ में)
२. अंग्रेजी कम्युनिकेशन स्किल या संस्कृत।

**अहर्ताएँ—**

१. १०+२ में न्यूनतम ५० प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण।
२. आयु सीमा २२ वर्ष अधिकतम।
३. यदि कोई छात्र बी.ए./बी.एस-सी. (३ वर्ष का कोर्स सफलतापूर्वक पूरा करने के पश्चात आगे स्नातकोत्तर कक्षा में नहीं पढ़ना चाहता हो तो उसे बी.ए./बी.एस-सी. की डिग्री दे दी जाएगी)।

## देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आरंभ हुआ देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा संचालित देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्र के सभी वर्गों को देव संस्कृति के महत्त्वपूर्ण सूत्रों से नियमित रूप से जोड़े रखने तथा विभिन्न विषयों पर उपयोगी पाठ्यसामग्री प्रतिमाह घर बैठे उपलब्ध कराने के व्यापक उद्देश्यों के साथ **देव संस्कृति जनसंचार कार्यक्रम** का शुभारंभ मई, २००६ से किया गया है।

## गायत्री महाविद्या का विश्वकोष पढ़ें-पढ़ाएँ

गायत्री महाविद्या है, महाविज्ञान है। इसके अंदर अध्यात्म एवं धर्म का समस्त ज्ञान सूत्र रूप में समाया हुआ है। इसकी व्याख्या करने का प्रयास निम्न साहित्य में किया गया है। इसका स्वाध्याय मानवमात्र के लिए अत्यंत उपयोगी है।

**ॐ सहित गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों की प्रेरणा देती पुस्तकें। प्रत्येक का मूल्य ३.०० रुपया।**

१. ईश्वर का विराट रूप, २. ब्रह्मज्ञान का प्रकाश, ३. शक्ति का सदुपयोग, ४. धन का सदुपयोग, ५. आपत्तियों में धैर्य, ६. नारी की महानता, ७. गृहलक्ष्मी की प्रतिष्ठा, ८. प्रकृति का अनुसरण, ९. मानसिक संतुलन, १०. सहयोग और सहिष्णुता, ११. इंद्रिय

संयम, १२. पवित्र जीवन, १३. परमार्थ और स्वार्थ का समन्वय, १४. सर्वतोमुखी उन्नति, १५. ईश्वरीय न्याय, १६. विवेक की कसौटी, १७. जीवन और मृत्यु, १८. धर्म की सुदृढ़ धारणा, १९. प्राणघातक व्यसन, २०. सावधानी और सुरक्षा, २१. उदारता और दूरदर्शिता, २२. स्वाध्याय और सत्संग, २३. आत्मज्ञान और आत्मकल्याण, २४. संतान के प्रति हमारा कर्त्तव्य, २५. शिष्टाचार और सहयोग, १. ऋषियुग्म का परिचय, २. हमारे सात आंदोलन, ३. गायत्री मंत्र-एक महाविज्ञान, ४. गायत्री की दैनिक साधना एवं यज्ञ पद्धति, ५. हमारे प्रमुख संस्थान।

**(१) गायत्री महाविद्या के तत्त्वज्ञान पर आधारित पुस्तकें।**

१. गायत्री साधना और यज्ञ प्रक्रिया, २. गायत्री की शक्ति और सिद्धि, ३. गायत्री की युगांतरीय चेतना, ४.गायत्री की प्रचंड प्राण ऊर्जा, ५. गायत्री की उच्चस्तरीय पाँच साधनाएँ, ६. देवताओं, अवतारों और ऋषियों की उपास्य गायत्री, ७. गायत्री के प्रत्यक्ष चमत्कार, ८. गायत्री का सूर्योपस्थान, ९. गायत्री और यज्ञ का अन्योन्याश्रित संबंध, १०. गायत्री साधना से कुंडलिनी जागरण, ११. गायत्री का ब्रह्मवर्चस, १२. गायत्री पंचमुखी और एकमुखी, १३. महिलाओं की गायत्री उपासना, १४. गायत्री के दो पुण्य प्रतीक—शिखा और सूत्र, १५. गायत्री का हर अक्षर शक्ति का स्रोत, १६. गायत्री साधना की सर्वसुलभ विधि, १७. गायत्री पंचरत्न, १८. गायत्री की अनुष्ठान और पुरश्चरण साधनाएँ, १९. गायत्री की चौबीस शक्तिधाराएँ, २०. गायत्री विषयक शंका समाधान।

**(२) गायत्री के स्वरूप, रहस्य एवं उसकी शक्तियों को दर्शाने वाली पुस्तकें।**

१. गायत्री कामधेनु है, २. गायत्री का वैज्ञानिक आधार, ३. गायत्री का शक्ति स्रोत—सविता देवता, ४. गायत्री और यज्ञ का संबंध, ५. गायत्री और यज्ञोपवीत, ६. गायत्री और उसकी प्राण प्रक्रिया, ७. गायत्री की असंख्य शक्तियाँ, ८. गायत्री की गुप्त शक्तियाँ,

९. गायत्री की पंचविधि दैनिक साधना, १०. गायत्री का स्वरूप और रहस्य, ११. गायत्री का नारी स्वरूप, १२. स्त्रियों का गायत्री अधिकार, १३. गायत्री मंत्र की विलक्षण शक्ति, १४. व्यक्तित्व परिष्कार की साधना, १५. आत्मिक प्रगति के लिए अवलंबन, १६. गायत्री उपासना क्यों और कैसे?

## (३) गायत्री संबंधी प्रमुख ग्रंथ

१. गायत्री महाविज्ञान संयुक्त (सजिल्द), २. गायत्री महाविज्ञान (प्रथम भाग), ३. गायत्री महाविज्ञान (द्वितीय भाग) ३२, ४. गायत्री महाविज्ञान (तृतीय भाग) , ५. गायत्री योग , ६. युग शक्ति गायत्री का अभिनव अवतरण , ७. गायत्री का मंत्रार्थ , ८. गायत्री चित्रावली, ९. गायत्री की २४ शक्तियाँ उनके यंत्र-मंत्र (सचित्र) , १०. गायत्री चालीसा ११. अमृत, पारस और कल्पवृक्ष , १२. यज्ञ पिता गायत्री माता, १३. गायत्री प्रार्थना एवं ध्यान, १४. गायत्री की दैनिक साधना, १५. गायत्री प्रार्थना, १६. नमो वेदमाता नमो विश्वमाता , १७. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन, १८. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन, १९. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार, २०. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान परक साधनाएँ, २१. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ, २२. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि।

**नोट :**—नई पुस्तक सूची पत्र डालकर निःशुल्क मँगा लें। साहित्य प्राप्त करने हेतु युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३ अथवा शांतिकुंज हरिद्वार (उत्तरांचल) अथवा स्थानीय शक्तिपीठ अथवा साहित्य विस्तार पटल से संपर्क करें। युग निर्माण योजना, मथुरा के नाम ड्राफ्ट या मनिआर्डर से धनराशि (पुस्तक मूल्य+डाक व्यय) भेजकर मँगा सकते हैं।

*मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा*